डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, अष्टम पत्र

काव्य में मिथक

काव्य में परंपरागत, पौराणिक या लोकविश्वास मूलक संदर्भों के लिए मिथक शब्द का प्रयोग किया जाता है। वास्तव में मिथक ऐसे संदर्भ हैं, जिनके पीछे विश्वास की शक्ति निहित होती है। लोकमानस में मिथक की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। समय के साथ कई बार पुराने मिथक अनुपयुक्त सिद्ध होने लगते हैं और नए मिथ गढ़ लिए जाते हैं। पुनः पुराने मिथक नवीन रूप धारण कर उपस्थित हो जाते हैं। मिथक का लोकजीवन के साथ अत्यंत निकट संबंध होता है। काव्य में मिथकों को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर चित्रित किया जाता है।

मिथक शब्द का आरंभ अंग्रेज़ी के myth से होने की संभावना विद्वानों ने व्यक्त की है। पुराने समय में अंग्रेज़ी में Myth शब्द का प्रयोग देवी – देवताओं की गाथा के लिए होता था, जिसकी ऐतिहासिकता भले अविश्वसनीय हो, किंतु लोकमानस जिस पर विश्वास रखता हो। धीरे – धीरे प्रख्यात वीरों से संबंधित कथाएँ, लोकप्रसिद्ध चरित्र एवं क्रियाकलाप भी इसमें शामिल हो गए।

अंग्रेजी विश्वकोष के अनुसार मिथक को पारंपरिक आख्यान का अनिवार्य अंग माना गया है। पारंपरिक आख्यान के तीन भेद माने गए हैं –

1.मिथ 2. उपाख्यान (लीजेंड या सागा) 3. लोककथा (मार्चन)

मिथ का संबंध धार्मिक प्रथाओं से है।

उपाख्यान या पौराणिक कथा में युद्ध आधारित वास्तविक घटना होती है।

लोककथा गंभीर उद्देश्य नहीं रखती किंतु वह मनोरंजन प्रधान होती है।

मिथक का मनोविज्ञान से भी गहरा संबंध बताया गया है।

मिथक के अनेक प्रकार बताए गए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख प्रकार हैं –

सृष्टि की उत्पत्ति से संबंधित मिथक, सृष्टि के विकास से संबंधित मिथक, सृष्टि के लय से संबंधित मिथक, प्राकृतिक परिवर्तन बोधक मिथक, प्रकृति के रचना तत्वों पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि से संबंधित मिथक, प्रकृति के अवयवों समुद्र, नदी, पर्वत, जंगल आदि से संबंधित मिथक, देवताओं के जन्म से संबंधित मिथक, मानव की उत्पत्ति विषयक मिथक, प्राणियों के पुनर्जन्म या रूपांतरण संबंधी मिथक, स्वर्ग और नरक संबंधी मिथक इत्यादि।

काव्य में मिथक के प्रमुख प्रयोजन निम्नलिखित हैं –

1.मिथक काव्यार्थ को सघन बनाता है।

2.काव्यार्थ को व्यापक एवं विस्तीर्ण बनाता है।

3.जातीय एवं सांस्कृतिक चेतना से सम्बध्द करके काव्य को अधिक संवेद्य एवं प्रभावपूर्ण बनाता है।

4.काव्य के प्रतीकात्मक आयाम को सुदृढ करता है।

5.काव्य की रमणीयता एवं लालित्य में वृद्धि करता है।

6. युगीन यथार्थ को शाश्वत संदर्भों से जोड़ता है।

7.परंपरा एवं आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य करता है।

8. यथार्थ एवं आदर्श के बीच सेतु का कार्य करता है।

9. काव्यभाषा को विशिष्ट बनाता है।

10. मिथक कवि कल्पना की अभिव्यक्ति को ठोस माध्यम प्रदान करता है।

11. मिथक साधारणीकरण और संप्रेषण का प्रभावशाली माध्यम है।